बालकृष्ण भट्ट

जन्म	:	23 जून, 1844 ।
निधन	:	20 जुलाई 1914 ।
निवास-स्थान	:	इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश ।
माता-पिता	:	पार्वती देवी एवं बेनी प्रसाद भट्ट । पिता एक व्यापारी थे और माता एक सुसंस्कृत महिला जिन्होंने बालकृष्ण भट्ट के मन में अध्ययन की रुचि एवं लालसा जगाई ।
शिक्षा	:	प्रारंभ में संस्कृत का अध्ययन, 1867 में प्रयाग के मिशन स्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा दी ।
वृत्ति	:	1869 से 1875 तक प्रयाग के मिशन स्कूल में अध्यापन । 1885 में प्रयाग के सी० ए० वी० स्कूल में संस्कृत का अध्यापन । 1888 में प्रयाग की कायस्थ पाठशाला इंटर कॉलेज में अध्यापक नियुक्त, किंतु उग्र स्वभाव के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी और उसके बाद से लेखन कार्य पर ही निर्भर ।
विशेष परिस्थिति	:	पिता के निधनोपरांत पैतृक व्यापार सँभालने के नाम पर गृहकलह का सामना । पैतृक घर छोड़कर घोर आर्थिक संकट से जूझते हुए हिम्मत से काम लिया और साहित्य के प्रति समर्पित रहे ।
रचनात्मक सक्रियता	:	भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से 'हिंदी वर्द्धिनी सभा' प्रयाग की ओर से 1877 में 'हिंदी प्रदीप' नामक मासिक पत्र निकालना प्रारंभ किया । इसे वे 33 वर्षों तक चलाते रहे । इसमें नियमित रूप से सामाजिक-साहित्यिक-नैतिक-राजनीतिक विषयों पर निबंध लिखते रहे । 1881 में वेदों की युक्तिपूर्ण समीक्षा की । 1886 में लाला श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर' की कठोर आलोचना की । जीवन के अंतिम दिनों में 'हिंदी शब्दकोश' के संपादन के लिए श्याम सुंदर दास द्वारा काशी आमंत्रित, किंतु अच्छा व्यवहार न होने पर अलग हो गए ।
रचनाएँ	:	उपन्यास - रहस्य कथा, नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, गुप्त वैरी, रसातल यात्रा, उचित दक्षिणा, हमारी घड़ी, सद्भाव का अभाव । नाटक - पद्मावती, किरातार्जुनीय, वेणी संहार, शिशुपाल वध, नल दमयंती या दमयंती स्वयंवर, शिक्षादान, चंद्रसेन, सीता वनवास, पतित पंचम, मेघनाद वध, कट्टर सूम की एक नकल, वृहन्नला, इंगलैंडेश्वरी और भारत जननी, भारतवर्ष और कलि, दो दूरदेशी, एक रोगी और एक वैद्य, रेल का विकट खेल, बालविवाह आदि । प्रहसन - जैसा काम वैसा परिणाम, नई रोशनी का विष, आचार विडंबन आदि । निबंध - 1000 के आस-पास निबंध जिनमें सौ से ऊपर बहुत महत्त्वपूर्ण । 'भट्ट निबंधमाला' नाम से दो खंडों में एक संग्रह प्रकाशित ।

बालकृष्ण भट्ट आधुनिक हिंदी गद्य के आदि निर्माताओं और उन्नायक रचनाकारों में एक हैं । वे भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकारों में से हैं । वे हिंदी के प्रारंभिक युग के प्रमुख और महान पत्रकार, निबंधकार तथा हिंदी की आधुनिक आलोचना के प्रवर्तकों में अग्रगण्य हैं । उन्होंने आधुनिक हिंदी साहित्य को अपने प्रतिभाशाली जनधर्मी

व्यक्तित्व और लेखन से एक नवीन धरातल, नवीन दिशा और नया रूप-रंग और मानस दिया । निश्चय ही इस महत्तर युगांतरकारी कार्य में वे एकाकी नहीं थे, स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, राधाचरण गोस्वामी जैसे अनेक महान साहित्यकार उनके साथ थे । किंतु यह एक सर्वसम्मत स्थापित मान्यता है कि अपने युग के सर्वाधिक सक्रिय, मुखर और प्रदीर्घ समय तक सुदृढ़ निष्ठा के साथ तेजस्वी लेखन द्वारा साहित्य सेवा करते रहने वाले समर्पित साहित्यकार थे बालकृष्ण भट्ट । भारतेंदु युग के दो-तीन प्रमुख साहित्यकारों में एक, जिनके अनवरत लेखन से भारतेंदु युग का रचनात्मक युग-व्यक्तित्व निर्मित हुआ तथा आगे के द्विवेदी युग का मूलाधार निर्मित हो सका । साहित्य केवल कल्पना-विलास और मनोरंजन की वस्तु नहीं है, अपितु वह 'जन समूह के चित्त के विकास का संवाहक' और जन संस्कृति के विकास प्रवाह का मूर्त वाङ्मय उपादान है जो गहन लोक संपृक्ति से उपजता और दिशा पाता है – यह बोधपूर्ण प्रधान मान्यता भारतेंदु युग के साहित्य से बनती है और इसके द्रष्टाओं में बालकृष्ण भट्ट प्रमुख हैं । आधुनिक हिंदी नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में नए सिरे से अपनी भाषा और साहित्य की मौलिक लोकवादी प्रकृति एवं जातीय निष्ठा की पहचान करते हुए तदनुरूप दिशा और प्रवाह देने का कार्य जिन महान लेखकों ने अपनी रचनात्मक गतिविधियों द्वारा संपन्न किया उनमें भट्ट जी विशेष रूप से स्मरणीय हैं ।

बालकृष्ण भट्ट गद्यकार थे । अपनी अभिरुचि, मानस और प्रतिभा से, परिवेश और यथार्थ से संपूर्ण सरोकार रखनेवाले लेखक-पत्रकार । उनके गद्य की भाषा और कला की जड़ें भी परिवेश और यथार्थ में ही थीं । लोक व्यवहार में, बोलचाल-बातचीत और अभिव्यक्ति में मूर्त भाषा और कला ही उनके गद्य का कलेवर बन जाती है । वह नवजागरण और स्वाधीनता संघर्ष का दौर था जिसमें भीतरी और बाहरी, स्वदेशी और विदेशी शक्तियों से टकराव और संघर्ष ही जागरूक गद्य लेखक की नियति थी । यह टकराव और संघर्ष भट्ट जी के लेखन में आंतरिक दृढ़ता, तेज और तेवर बनकर उभरता है । भट्ट जी ने 'हिंदी प्रदीप' में पूरे-अधूरे अनेक उपन्यास लिखे, नाटक और प्रहसन लिखे, किंतु निबंध ही उनकी वह अपनी विधा है जिसमें उनका अभिप्रायपूर्ण सोद्देश्य लेखन पूरी शक्ति-सामर्थ्य और वैभव के साथ प्रकट हुआ है । सामयिक समस्याओं पर उन्होंने जमकर लिखा है । बाल विवाह, स्त्री शिक्षा, महिला स्वातंत्र्य, राजा-प्रजा, कृषकों की दुरवस्था, अंग्रेजी शिक्षा, सुशिक्षितों में परिवर्तन, देश सेवा, अंधविश्वास आदि विषयों पर उन्होंने खूब लिखा । विविध मनोभावों और भाषा-साहित्य के विषयों पर भी खुलकर लिखा । व्यक्तित्व व्यंजक, आत्मपरक, कलात्मक निबंध भी उन्होंने इतने लिखे कि उनकी संख्या सैकड़ों में है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंधकार के रूप में उन्हें अंग्रेजी साहित्य के एडीसन और स्टील की श्रेणी में रखा है ।

यहाँ प्रस्तुत 'बातचीत' शीर्षक निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंधकला के साथ-साथ भाषा-शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है । प्रस्तुत निबंध भट्ट जी के बारे में ऊपर कही गई बातों को सहज ही पुष्ट और प्रमाणित करता है ।

◆ ◆ ◆

> **"उनकी वास्तविक प्रतिभा एक अध्ययनशील विद्वान और तीक्ष्ण बुद्धि आलोचक की है । उन्हें आधुनिक हिंदी आलोचना का जन्मदाता कहना अनुचित न होगा । धर्म और दर्शन को सामाजिक विकास की कसौटी पर कसकर बालकृष्ण भट्ट ने प्रगतिशील आलोचना की नींव डाली थी ।"**
>
> **–रामविलास शर्मा**

बातचीत

इसे तो सभी स्वीकार करेंगे कि अनेक प्रकार की शक्तियाँ जो वरदान की भाँति ईश्वर ने मनुष्य को दी हैं, उनमें वाक्शक्ति भी एक है । यदि मनुष्य की और इंद्रियाँ अपनी-अपनी शक्तियों में अविकल रहतीं और वाक्शक्ति मनुष्यों में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूँगी सृष्टि का क्या हाल होता । सब लोग लुंज-पुंज से हो मानो कोने में बैठा दिए गए होते और जो कुछ सुख-दुख का अनुभव हम अपनी दूसरी-दूसरी इंद्रियों के द्वारा करते, उसे अवाक् होने के कारण, आपस में एक-दूसरे से कुछ न कह-सुन सकते । इस वाक्शक्ति के अनेक फायदों में 'स्पीच' वक्तृता और बातचीत दोनों हैं । किंतु स्पीच से बातचीत का ढंग ही निराला है । बातचीत में वक्ता को नाज-नखरा जाहिर करने का मौका नहीं दिया जाता है कि वह बड़े अंदाज से गिन-गिनकर पाँव रखता हुआ पुलपिट पर जा खड़ा हो और पुण्याहवाचन या नांदीपाठ की भाँति घड़ियों तक साहबान मजलिस, चेयरमैन, लेडीज एंड जेंटिलमेन की बहुत सी स्तुति करे-करावे और तब किसी तरह वक्तृता का आरंभ करे । जहाँ कोई मर्म या नोक की चुटीली बात वक्ता महाशय के मुख से निकली कि ताली-ध्वनि से कमरा गूँज उठा । इसलिए वक्ता को खामख्वाह ढूँढ़कर कोई ऐसा मौका अपनी वक्तृता में लाना ही पड़ता है जिसमें करतलध्वनि अवश्य हो ।

वहीं हमारी साधारण बातचीत का कुछ ऐसा घरेलू ढंग है कि उसमें न करतलध्वनि का कोई मौका है, न लोगों के कहकहे उड़ाने की कोई बात ही रहती है । हम दो आदमी प्रेमपूर्वक संलाप कर रहे हैं । कोई चुटीली बात आ गई, हँस पड़े । मुसकराहट से होठों का केवल फड़क उठना ही इस हँसी की अंतिम सीमा है । स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा कर देना है । घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है । उसमें स्पीच की वह संजीदगी बेकदर हो धक्के खाती फिरती है ।

जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने, फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है । जो कुछ मवाद या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है । चित्त हल्का और स्वच्छ हो परम आनंद में मग्न हो जाता है । बातचीत का भी एक खास तरह का मजा होता है । जिनको बातचीत करने की लत पड़ जाती है, वे इसके पीछे खाना-पीना भी छोड़ बैठते हैं । अपना बड़ा हर्ज कर देना उन्हें पसंद आता है, पर वे बातचीत का मजा नहीं खोना चाहते । राबिंसन क्रूसो का किस्सा बहुधा लोगों ने पढ़ा होगा जिसे 16 वर्ष तक मनुष्य-मुख देखने को भी नहीं मिला । कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बीच में रह 16 वर्ष के उपरांत उसने फ्राइडे के मुख से एक बात सुनी । यद्यपि उसने अपनी जंगली बोली में कहा था, पर उस समय

रॉबिंसन को ऐसा आनंद हुआ मानो उसने नए सिरे से फिर से आदमी का चोला पाया । इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की वाक्‌शक्ति में कहाँ तक लुभा लेने की ताकत है । जिनसे केवल 'पत्र-व्यवहार' है, कभी एक बार भी साक्षात्कार नहीं हुआ, उन्हें अपने प्रेमी से बातें करने की कितनी लालसा रहती है । अपना आभ्यंतरिक भाव दूसरे पर प्रकट करना और उसका आशय आप ग्रहण कर लेना शब्दों के ही द्वारा हो सकता है । सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता । बेन जानसन का यह कहना कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, बहुत ही उचित जान पड़ता है ।

इस बातचीत की सीमा दो से लेकर वहाँ तक रखी जा सकती है, जहाँ तक उनकी जमात मीटिंग या सभा न समझ ली जाए । एडीसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी अपना दिल एक दूसरे के सामने खोलते हैं । जब तीन हुए तब वह दो की बात कोसों दूर गई । कहा भी है कि छह कानों में पड़ी बात खुल जाती है । दूसरे यह कि किसी तीसरे आदमी के आ जाते ही या तो वे दोनों अपनी बातचीत से निरस्त हो बैठेंगे या उसे निपट मूर्ख अज्ञानी समझ बनाने लगेंगे ।

जैसे गरम दूध और ठंढे पानी के दो बर्तन पास-पास साट के रखे जाएँ तो एक का असर दूसरे में पहुँच जाता है, अर्थात दूध ठंढा हो जाता है और पानी गरम, वैसे ही दो आदमी पास बैठे हों तो एक का गुप्त असर दूसरे पर पहुँच जाता है, चाहे एक दूसरे को देखें भी नहीं, तब बोलने को कौन कहे, एक के शरीर की विद्युत दूसरे में प्रवेश करने लगती है । जब पास बैठने का इतना असर होता है तब बातचीत में कितना अधिक असर होगा, इसे कौन न स्वीकार करेगा । अस्तु, अब इस बात को तीन आदमियों के साथ देखना चाहिए । मानो एक त्रिकोण सा बन जाता है । तीनों चित्त मानो तीन कोण हैं और तीनों की मनोवृत्ति के प्रसरण की धारा मानो उस त्रिकोण की तीन रेखाएँ हैं । गुप-चुप असर तो उन तीनों में परस्पर होता ही है । जो बातचीत तीन में की गई, वह मानो अँगूठी में नग सी जड़ जाती है । उपरांत जब चार आदमी हुए तब बेतकल्लुफी को बिलकुल स्थान नहीं रहता । खुल के बातें न होंगी । जो कुछ बातचीत की जाएगी वह 'फॉर्मैलिटी' गौरव और संजीदगी के लच्छे में सनी हुई होगी । चार से अधिक की बातचीत तो केवल राम-रमौवल कहलाएगी । उसे हम संलाप नहीं कह सकते । इस बातचीत के अनेक भेद हैं । दो बुड्ढों की बातचीत प्रायः जमाने की शिकायत पर हुआ करती है । वे बाबा आदम के समय की ऐसी दास्तान शुरू करते हैं; जिसमें चार सच तो दस झूठ । एक बार उनकी बातचीत का घोड़ा छूट जाना चाहिए, पहरों बीत जाने पर भी अंत न होगा । प्रायः अंग्रेजी राज्य, परदेश और पुराने समय की रीति-नीति का अनुमोदन और इस समय के सब भाँति लायक नौजवानों की निंदा उनकी बातचीत का मुख्य प्रकरण होगा ! पढ़े-लिखे हुए के लिए तो शेक्सपियर, मिल्टन, मिल और स्पेंसर जीभ पर नाचा करेंगे । अपनी लियाकत के नशे में चूर 'हमचुनी दीगरे नेस्त' अक्खड़पन की चर्चा छेड़ेंगे । दो हम सहेलियों की बातचीत का कुछ जायका ही निराला है । रस का समुद्र मानो उमड़ा चला आ रहा है । इसका पूरा स्वाद उन्हीं से पूछना चाहिए जिन्हें ऐसों की रस सनी बात सुनने को कभी भाग्य लड़ा है ।

दो बुढ़ियों की बातचीत का मुख्य प्रकरण, बहू-बेटी वाली हुईं तो, अपनी बहुओं या बेटों का गिला शिकवा होगा । या वे बिरादराने का कोई ऐसा रमरसरा छेड़ बैठेंगी कि बात करते-करते अंत में खोढ़े दाँत

निकाल लड़ने लगेंगी । लड़कों की बातचीत, खिलाड़ी हुए तो, अपनी-अपनी तारीफ करने के बाद वे कोई सलाह गाँठेंगे जिससे उनको अपनी शैतानी जाहिर करने का पूरा मौका मिले । स्कूल के लड़कों की बातचीत का उद्देश्य अपने उस्ताद की शिकायत या तारीफ या अपने सहपाठियों में किसी के गुन-औगुन का कथोपकथन होता है । पढ़ने में कोई लड़का तेज हुआ तो कभी अपने सामने दूसरे को कुछ न गिनेगा । सुस्त और बोदा हुआ तो दबी बिल्ली का सा स्कूल भर को अपना गुरु ही मानेगा । इसके अलावा बातचीत की और बहुत सी किस्में हैं । राजकाज की बात, व्यापार संबंधी बातचीत, दो मित्रों में प्रेमालाप इत्यादि । हमारे देश में अशिक्षित लोगों में बतकही होती है । लड़की लड़केवालों की ओर से एक-एक आदमी बिचवई होकर दोनों में विवाह संबंध की कुछ बातचीत करते हैं । उस दिन से बिरादरीवालों को ज़ाहिर कर दिया जाता है कि अमुक की लड़की का अमुक के लड़के के साथ विवाह पक्का हो गया और यह रसम बड़े उत्सव के साथ की जाती है । चंडूखाने की बातचीत भी निराली होती है । निदान, बात करने के अनेक प्रकार और ढंग हैं ।

योरप के लोगों में बात करने का हुनर है । 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' यहाँ तक बढ़ा है कि स्पीच और लेख दोनों इसे नहीं पाते । इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वन्मंडली में है । ऐसे चतुराई के प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुन कान को अत्यंत सुख मिलता है । सुहृद गोष्ठी इसी का नाम है । सुहृद गोष्ठी की बातचीत की यह तारीफ है कि बात करनेवालों की लियाकत अथवा पंडिताई का अभिमान या कपट कहीं एक बात में भी प्रकट न हो, वरन् क्रम में रसाभास पैदा करनेवाले शब्दों को बरकते हुए चतुर सयाने अपनी बातचीत को सरस रखते हैं । वह रस हमारे आधुनिक शुष्क पंडित की बातचीत में, जिसे शास्त्रार्थ कहते हैं, कभी आवेगा ही नहीं । मुर्ग और बटेर की लड़ाइयों की झपटा-झपटी के समान उनकी नीरस काँव-काँव में सरस संलाप की चर्चा ही चलाना व्यर्थ है, वरन् कपट और एक दूसरे को अपने पांडित्य के प्रकाश से बाद में परास्त करने का संघर्ष आदि रसाभास की सामग्री वहाँ बहुतायत के साथ आपको मिलेगी । घंटे भर तक काँव-काँव करते रहेंगे तो कुछ न होगा । बड़ी-बड़ी कंपनी और कारखाने आदि बड़े से बड़े काम इसी तरह पहले दो-चार दिली दोस्तों की बातचीत से शुरू किए गए । उपरांत बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक बढ़े कि हजारों मनुष्यों की उनसे जीविका चलने लगी और साल में लाखों की आमदनी होने लगी । पच्चीस वर्ष के ऊपरवालों की बातचीत अवश्य ही कुछ न कुछ सारगर्भित होती होगी, अनुभव और दूरंदेशी से खाली न होगी और पच्चीस से नीचे की बातचीत में यद्यपि अनुभव, दूरदर्शिता और गौरव नहीं पाया जाता, पर इसमें एक प्रकार का ऐसा दिलबहलाव और ताजगी रहती है जिसकी मिठास उससे दस गुनी चढ़ी-बढ़ी है ।

यहाँ तक हमने बाहरी बातचीत का हाल लिखा है जिसमें दूसरे फरीक के होने की बहुत आवश्यकता है, बिना किसी दूसरे मनुष्य के हुए जो किसी तरह संभव नहीं है और जो दो ही तरह पर हो सकता है--या तो कोई हमारे यहाँ कृपा करे या हमीं जाकर दूसरे को कृतार्थ करें । पर यह सब तो दुनियादारी है जिसमें कभी-कभी रसाभास होते देर नहीं लगती । क्योंकि जो महाशय अपने यहाँ पधारें उनकी पूरी दिलजोई न हो सकती तो शिष्टाचार में त्रुटि हुई । अगर हमीं उनके यहाँ गए तो पहले तो बिना बुलाए जाना ही अनादर का मूल है और जाने पर अपने मन माफिक बर्ताव न किया गया तो मानो दूसरे प्रकार का नया घाव हुआ । इसलिए सबसे उत्तम प्रकार बातचीत करने का हम यही समझते हैं कि हम

वह शक्ति अपने में पैदा कर सकें कि अपने आप बात कर लिया करें। हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आईना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कुछ दुर्घट बात नहीं है और जो एक ऐसा चमनिस्तान है जिसमें हर किस्म के बेल-बूटे खिले हुए हैं, ऐसे चमनिस्तान की सैर में क्या कम दिलबहलाव है ? मित्रों का प्रेमालाप कभी इसकी सोलहवीं कला तक भी न पहुँच सका। इसी सैर का नाम ध्यान या मनोयोग या चित्त को एकाग्र करना है जिसका साधन एक-दो दिन का काम नहीं। बरसों के अभ्यास के उपरांत यदि हम थोड़ी भी अपनी मनोवृत्ति स्थिर कर अवाक् हो अपने मन के साथ बातचीत कर सकें तो मानो अहोभाग्य ! एक वाक्शक्ति मात्र के दमन से न जाने कितने प्रकार का दमन हो गया। हमारी जिह्वा कतरनी के समान सदा स्वच्छंद चला करती है, उसे यदि हमने काबू में कर लिया तो क्रोधादिक बड़े-बड़े अजेय शत्रुओं को बिना प्रयास जीत अपने वश में कर डाला। इसलिए अवाक् रह अपने बातचीत करने का यह साधन यावत् साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मंदिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. अगर हममें वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता ?
2. बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन और एडीसन के क्या विचार हैं ?
3. 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है ?
4. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है ? इसके द्वारा वह कैसे अपने लिए सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है ?
5. व्याख्या करें :
   (क) हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आईना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई दुर्घट बात नहीं है।
   (ख) सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।
6. इस निबंध की क्या विशेषताएँ हैं ?

पाठ के आस-पास

1. बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के प्रमुख रचनाकार हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें हिंदी का 'एडीसन' कहा है। भट्ट जी के अन्य निबंधों को उपलब्ध कर उन्हें पढ़ें।
2. भारतेंदु युग निबंध लेखन की दृष्टि से अत्यंत उर्वर युग था। इस युग के निबंधकारों की एक सूची बनाएँ एवं उनके निबंधों की केंद्रीय वस्तु का विवरण दें।

3. आप किनसे बातचीत करना सर्वाधिक पसंद करते हैं, उनसे बातचीत का कल्पित रूप अपनी डायरी में नोट करें।
4. निबंध क्या है ? ये कितने प्रकार के होते हैं ? प्रस्तुत निबंध किस कोटि का निबंध है ?
5. किसी निबंध को लिखने में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
6. आपके सर्वप्रिय निबंधकार कौन हैं, अपने सर्वाधिक प्रिय निबंध को विद्यालय की गोष्ठी में प्रस्तुत करें।

भाषा की बात

1. 'राम-रमौवल' का क्या अर्थ हैं ? इसका वाक्य में प्रयोग करें।
2. नीचे दिए गए वाक्यों से सर्वनाम छाँटें और बताएँ कि वे सर्वनाम के किन भेदों के अंतर्गत हैं -
   (क) कोई चुटीली बात आ गई हँस पड़े ।
   (ख) इसे कौन न स्वीकार करेगा ।
   (ग) इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वन्मंडली में है ।
   (घ) वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आईना है ।
   (ङ) हम दो आदमी प्रेमपूर्वक संलाप कर रहे हैं ।
3. निम्नलिखित शब्द संज्ञा के किन भेदों के अंतर्गत हैं -
   धुआँ, आदमी, त्रिकोण, कान, शेक्सपियर, देश, मीटिंग, पत्र, संसार, मुर्गा, मंदिर
4. वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें -
   शक्ति, उद्देश्य, बात, लत, नग, अनुभव, प्रकाश, रंग, विवाह, दाँत
5. निम्नलिखित वाक्यों से विशेषण चुनें -
   (क) हम दो आदमी प्रेमपूर्वक संलाप कर रहे हैं ।
   (ख) इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वन्मंडली में है ।
   (ग) सुस्त और बोदा हुआ तो दबी बिल्ली का सा स्कूल भर को अपना गुरु ही मानेगा ।

शब्द निधि :

वक्तृता : बोलने की कला, भाषण देने की कला
पुलपिट : पायदान
पुण्याहवाचन : धार्मिक कर्मकांड में मांगलिक श्लोक पढ़ना
नांदीपाठ : नाटक के प्रारंभ में मंगल पाठ
खामख्वाह : बेमतलब, बर्बस
संलाप : हार्दिक बातचीत
संजीदगी : गंभीरता
बेकदर : सम्मानहीन
आभ्यंतरिक : हार्दिक, आंतरिक
निरस्त : बंद कर देना, स्थगित कर देना
फॉर्मेलिटी : औपचारिकता
लियाकत : योग्यता
हमचुनी दीगरे नेस्त : हम ही सब कुछ हैं दूसरा कुछ भी नहीं, एंकोहं द्वितीयो नास्ति
बिचवई : मध्यस्थता
चंडूखाने : अफीम खानेवाले लोगों की मंडली के लिए सुरक्षित स्थान
दिलजोई : मनबहलाव
सारगर्भित : जिसमें कुछ सार या तत्त्व हो
प्रपंचात्मक : उलझा हुआ, पहेलीनुमा
दुर्घट : ऐसा कुछ जिसके घटित होने की आशा न हो
चमनिस्तान : हरे-भरे बागों का इलाका
कतरनी : कैंची
सोपान : सीढ़ी
बरकते हुए : बरतते हुए